दिव्य दीक्षा : अनन्तता का प्रवेश-द्वार

स्वामी इन्दिरानन्द द्वारा

आज़ हम सिद्धयोग के इतिहास में और पूरे विश्व के असंख्य लोगों के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना का उत्सव मना रहे हैं। ठीक बहत्तर वर्ष पहले बाबा मुक्तानन्द को अपने श्रीगुरु भगवान नित्यानन्द से दिव्य दीक्षा प्राप्त हुई।

यह एक अद्वितीय महत्ता का क्षण था, जो बाबा जी को आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाने वाला तथा विश्व भर के असंख्य साधकों को अन्तर-जाग्रति प्रदान करने वाला था।

दिव्य दीक्षा 'शक्तिपात' दीक्षा को उद्धृत करती है जिसका शाब्दिक अर्थ है,"दिव्य शक्ति का अवतरण"। सिद्धगुरु द्वारा 'शक्तिपात' के माध्यम से कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत की जाती है यह हमारी सत्ता के गर्भ में स्थित आध्यात्मिक ऊर्जा है। अनुग्रह का यह कृत्य मोक्ष प्राप्ति तक ले जाने वाला द्वार खोल देता है। यह हमारे लिए समस्त सृष्टि के साथ निरन्तर ऐक्य की अनुभूति में रहना सम्भव बना देता है।

बहुत से लोगों के लिए, ऐक्य की यह धारणा यानि सभी वस्तुओं के बीच एकता होना, एक सुन्दर और काव्यात्मक विचार है, जीवन की एक अन्तर्निहित सत्यता की संकल्पना करने का एक तरीका है। शक्तिपात के माध्यम से ऐक्य की इस कल्पना को, वास्तविक अनुभूति में परिवर्तित कर पाना सम्भव है।

जब अन्तर शक्ति जाग्रत की जाती है तब हम न केवल स्वयं को बल्कि इस बह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु को ईश्वर के रूप में अनुभव कर पाते हैं। इसी कारण से कुण्डलिनी विषयक शास्त्र स्पष्ट रूप से कहते हैं :

शक्तिपात ही दीक्षा है।

आध्यात्मिक दीक्षा के सभी रूपों में, 'शक्तिपात' सर्वोपरि है। श्रीगुरु से कृपा का यह सम्प्रेषण हमारी अपनी सत्ता में, सत्य की आन्तरिक जागरूकता को प्रज्ञवलित कर देता है। शक्तिपात, मनुष्य के रूप में हमारे पूर्ण सामर्थ्य को जीवन्त कर देता है।

बाबा जी की ईश्वर की खोज की कहानी स्पष्ट करती है कि किस प्रकार सत्य का ज्ञान पाने के लिए अन्तर-जागृति अत्यावश्यक है।

पन्द्रह वर्ष की आयु में, बाबा जी ने ईश्वर को खोजने के लिए अपना घर छोड़ दिया। उन्होंने पूरे भारत में, दो दशक से भी ज्यादा समय पैदल भ्रमण करते हुए बिताया जहाँ वे कई महान सन्तों व महात्माओं से मिले। बाबा जी ने अनगिनत आध्यात्मिक अभ्यास किए, यौगिक शास्त्रों को कण्ठस्थ किया और बहुत सी विद्याओं में प्रभुत्व हासिल किया पाक-कला, आयुर्वेदिक औषधि से लेकर हठयोग तक। तथापि अपने गुरु भगवान नित्यानन्द से मिलने के बाद ही और उनसे शक्तिपात दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही, बाबा जी को सत्य का आन्तरिक अनुभव प्राप्त हुआ।

अपने ग्रन्थ 'चित्शक्ति विलास' में बाबा जी अपनी दीक्षा का वर्णन करते हैं :

अन्दर-बाहर के जगत में
भिन्न-भिन्न भेद करके 'एक में अनेक' दिखाने वाली भेदवृत्ति को छोड़कर
क्षण भर के लिए 'अनेक में एक' भाव की अनुभूति हुई।

ऐसी असाधारण शक्ति होती है शक्तिपात की: यह सत्य के अनुभव के प्रति हमारे बोध को खोल देता है। हम सब के लिए, शक्तिपात के क्षण में हम चाहे जो भी अनुभव करें, एक बात निश्चित है, इस दिव्य दीक्षा को प्राप्त करने के बाद और साधना में निरन्तर प्रयत्न करने से, हमारे जीवन सदा के लिए रूपान्तरित हो जाते हैं। बहुत से सिद्धयोगियों ने बताया है कि शक्तिपात दीक्षा प्राप्त होने के बाद, उन्होंने अपने जीवन में, खुद में, तथा अन्य लोगों व ईश्वर के साथ उनके जुड़ाव के भाव में परिवर्तन होते देखा। वे हर्ष और उल्लास से भर गए। और उन्होंने एक ऐसे प्रेम का अनुभव किया जिसके अस्तित्व के बारे में भी उन्हें जानकारी नहीं थी। उनके जीवन को एक नया अर्थ मिल गया।

शक्तिपात के बारे में ऐसा क्या है जो इतने नाटकीय ढंग से हमारे जीवन की दिशा को बदल सकता है? वह जो शक्तिपात दीक्षा के दौरान घटता है-हमारे मन और हमारी इन्द्रियों से कहीं बहुत परे - वास्तव में विस्मयकारी है।

काश्मीर शैवदर्शन के आधारभूत ग्रन्थ शक्तिपात का वर्णन आणवमल के नाश के रूप में करते हैं। यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है।

'आणव' शब्द संस्कृत के शब्द 'अणु' से आया है, जिसका अर्थ है "छोटा" या "सीमित" और यहाँ जीवात्मा की अवस्था को सूचित करता है। 'मल' का अर्थ है आवरण या अशुद्धता। 'आणव मल' एक जन्मजात सहज आस्था को उद्धृत करता है कि हम भगवान से पृथक हैं।

करुणावश परमात्मा, साधकों को अपनी कृपा प्रदान करते हैं ताकि वे भगवान से अपनी पृथकता के भाव का विलय करके उन्हे एकत्व के बोध में वापस ले आएँ।

'शक्तिपात दीक्षा' का मूल है भगवान से पृथकता के भाव का विलय होना। एक बार जब यह विलय हो जाए, तब हम यह पहचानने के पथ पर होते हैं कि हमारी सच्ची आत्मा का स्वरूप वही है जो सृष्टिकर्ता और पूरी सृष्टि का है। हम विशुद्ध चेतना हैं। हम प्रेम हैं। हम प्रकाश हैं। हम हमेशा से ऐसे हैं और हमेशा ऐसे ही रहेंगे।

कई वर्षों से, बाबा जी और गुरुमाई जी ने साधकों को सच्ची आत्मा को जानने का अवसर प्रदान करने के लिए विश्व भर में शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित कराए हैं।
उन्होंने हमें अनेक शक्तिशाली एवं सुगम्य आध्यात्मिक अभ्यास तथा सिखावनियाँ भी प्रदान कीं हैं – और उसका एक बड़ा उचित प्रयोजन है! पृथकता तथा भेद देखने के हमारे मानसिक स्वभाव का अभी पूरी तरह से विलय होना आवश्यक है।
यद्यपि 'शक्तिपात दीक्षा' आणव मल का विलय करती है, तब भी मन को शुद्ध करने की आवश्यकता है ताकि इस दीक्षा के माध्यम से जो सामर्थ्य जाग्रत की गई है उसे समझा जा सके। एक बार जब शक्तिपात द्वारा प्रवेश द्वार खोल दिया जाता है तो हमें परम सत्य के अपने अभिज्ञान की दहलीज़ के पार कदम रखना ही होगा।

श्रीगुरु द्वारा सिखाए गए साधना के अभ्यास स्वभाविक रूप से आन्तरिक प्रशान्ति और स्पष्टता को उदित होने देते हैं, ताकि तब हम अपने सच्चे स्वरूप को बारम्बार और गहनता से अनुभव करना आरम्भ कर सकें। प्रत्येक बार जब हम ध्यान करते हैं, प्रत्येक बार जब हम मन्त्र दोहराते हैं, भगवान के नाम का संकीर्तन करते हैं, प्रत्येक बार जब हम सेवा करते हैं या दक्षिणा अर्पित करते हैं या अपनी अनुभूतियों पर चिन्तन-मनन करते हैं, हम सत्य का अनुभव करने के लिए अपने अन्तर में जगह बनाते हैं।

साधना द्वारा, हम अपने अन्तर में निहित श्रीगुरुकृपा के अभिरक्षक बन जाते हैं।

बाबा जी की दिव्य दीक्षा की इस वर्षगाँठ पर मनाने के लिए कितना कुछ है। अपने गुरु की कृपा प्राप्त करके, अपनी साधना को पूर्ण करके, विश्व में शक्तिपात लाने की अपने गुरु की आज्ञा का पालन करके, बाबा जी ने विश्व-भर के साधकों के लिए उस दीक्षा को सुलभ बनाया जो पहले गुप्त हुआ करती थी। इस प्रकार, बाबा जी ने सभी पृष्ठभूमि के लोगों के लिए अपने अन्दर भगवान को जानना सम्भव बना दिया।

हम में से प्रत्येक में बाबा जी की विरासत जीवन्त है। साधना के पथ पर चलते हुए उनकी कृपा और सिखावनियाँ आज भी हमें अनुप्राणित तथा प्रेरित करती रहती हैं। और, विश्व को दिए गए उनके सभी पवित्र उपहारों में, हम बाबा जी को इस सबसे महान उपहार के लिए धन्यवाद दे सकते हैं: शक्तिपात प्रदान करने की शक्ति को, हमारी परमप्रिय श्रीगुरुमाई को सौंपना, जिन्होंने हर कदम पर साधकों को जाग्रत करना और मुक्ति के पथ पर उनका मार्गदर्शन करना, जारी रखा है।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।